

I
कॉपी

○



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल वर्ष 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय हिंदी विशिष्ट	विषय कोड 001	परीक्षा का माध्यम हिंदी
----------------------------------	-----------------	----------------------------

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

0552054

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	8	1	6	3	2	8	9	0
---	---	---	---	---	---	---	---	---

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

केंद्र क्रमांक 162001

हायर सेकेंडरी परीक्षा

परीक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केंद्राध्यक्ष

श्री. टी. पी. उ. मा. विद्यालय

शिवपुरी (म.प्र.)

केंद्राध्यक्ष/सहायक केंद्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

Smt. Rani Mahesh

Smt. Mahesh

01.05.18

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक र एवं निर्धारित मुद्रा

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

Smt. Malti Choudhary (V.A.)

Govt. H.S.S. Nahiya

Reg No. 7695

Mob. 9425

W.P. Gadwa

Govt. H.S.S. De

V.No. 7855

Mob. 9426658

A. B. Bhatnagar (Lecturer)

Govt. H.S.S. Shahpur

V.No. 7703

Mob. 942663959

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।			
प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक	अंकों में
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

केंद्राध्यक्ष/सहायक केंद्राध्यक्ष एवं परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर $\Rightarrow 1$

(अ) कृष्ण को लेने के लिए ।

(ब) भय में ।

(स) लातमणि ।

(द) पेंत ।

(इ) 31 वर्ष ।

B
S
E

उत्तर $\Rightarrow 2$

(अ) स्वरती ।

(ब) हनु शंभु ।

(स) आरव ।

(द) मातृभाषा ।

(इ) प्रवेश काश ।

उत्तर $\Rightarrow 3$

(1) असत्य ।

(2) असत्य ।

(3) सत्य ।

(4) असत्य ।

(5) सत्य ।

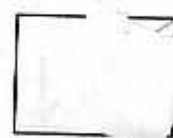
4



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक



अंश क्र.

[उत्तर 4]

(अ) गजमुख का मुख दशमुख (रावण) देखता है।

(ब) रामनारायण उपाध्याय को लिखने के लिए
मुकान्त चाहिए।

(स) डा. रामकुमार वर्मा की माताजी का नाम
राजरानी देवी था।

B (द) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार
S के होते हैं।

E (इ) रोला और उल्हावा के संयोग से इल्वा
हद बनता है।

[उत्तर 5]

(अ) मीरा के आराध्य $\Rightarrow$ श्रीकृष्ण

(ब) वापसी $\Rightarrow$ उवा प्रियंवदा

(स) कंस आतंकित था $\Rightarrow$ देवकी का लघोमाहीत रूप

(द) गेय मुकूक $\Rightarrow$ मीरा पदावली के बानदास

(इ) माता - पिता $\Rightarrow$ इन्द्र समास

5



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 5 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर $\Rightarrow$ 6

नाव में पानी भर जाने पर सवारों का कर्तव्य है कि वे उस पानी को बाहर निकालें और अपनी नाव को डूबने से बचाएं।

उत्तर $\Rightarrow$ 7

'पल्लव वसना' उस सूखी सी जाल को कहा गया जो बसंत के अभाव में अर्थात् पतझड़ ऋतु में सूख गई है। वह बसंत के आने पर ही पल्लवों से वस्त्रधारिणी बनेगी। पल्लव वसना उस शैलपुत्री के समान ही हैं।

उत्तर $\Rightarrow$ 8

'अरी सुहागिन' सम्बोधन होते ही विवाहित स्त्री के लिए आया है लेकिन प्रकृति की ओर भी संकेत दिया गया है।

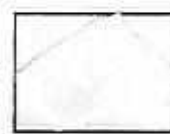
6



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 6 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर 9

मौ सरस्वती की वन्दना देवगण, ऋषिगण, ग्रीह्य
तपस्वी, भूत और अविद्य को जानने वाले
उनके प्रति ब्रह्मा जी, शंकरजी और
कार्तिकेय करते हैं।

उत्तर 10 (OR)

जब युवक साहस के साथ अपने प्रगति
मार्ग (पथ) पर आगे बढ़ता है तो
विघ्न - बाधाएँ सहम कर मार्ग
होड़ देती हैं।

उत्तर 11

'नये मेहमान' पुस्तकी में लेखक ने महानगरी
के मध्यमवर्गीय समाज की आवास
समस्या को बड़े व्यंग - विनोद एवं
सरल - सुबोध से किया है। महानगरी में
आवास की समस्या गम्भीर है। हारी -
विमारी इत्यादि समस्याओं से आज के
मध्यवर्गीय परिवार को झूझना पड़ता है।
इन समस्याओं के साथ पड़ोसियों के
साथ ताल - मेल बँधाना अच्छी खासी
चिन्ता व चर्चा का विषय है।

7



+



=



योग पूरा पृष्ठ

पृष्ठ / के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर 12

भय और आशंका में सूक्ष्म अंतर है। भय में आने वाली दुख या आपत्ति के कारण एक प्रकार का आवेगपूर्ण और इतमकादुक मनोभाव उत्पन्न होता है। भय कहलाता है। भय में दुख के बाहर जाने की आकुलता होती है।

'आशंका' में आने वाली भूतवृत्त का निश्चय न होने पर मात्र उसकी संभावना होती है तब जो आवेगमूल्य भय ही आशंका कहलाती है। आशंका को भय का 'लघुरूप' माना जाता है।

उत्तर 13

शरद जोशी के अनुसार अच्छे अध्ययन की विशेषताएँ निम्न हैं।

(1) अच्छा 'अध्ययन' रेडीमेड होता है वह सब विषय पर एक सा चलता है और सब में एक सा आनंद आता है।

(2) अच्छा 'अध्ययन' देर से आता है।

(3) अच्छा 'अध्ययन' प्रमुख वक़्त से असहमत होता है उसे उसकी प्रशंसा करता है।

(4) 'अध्ययन' की शेरबानियों में से एक विशेष प्रकार की गंध आती है वह गंध है - अध्ययन की गंध।



प्रश्न क्र.

उत्तर $\Rightarrow$ 14 (OR)

नैनो टेक्नोलॉजी के तहत मटेरियल के आकार को छोटा करके उसके द्वारा तैयार मटेरियल नैनो मटेरियल कहलाता है। इस टेक्नोलॉजी के कारण मटेरियल के गुण इलेक्ट्रिकल, थर्मल, ऑप्टिकल और मैकेनिकल इत्यादि हर 1 इंच पर बदलने लगते हैं और अत्यंत आश्चर्यजनक परिणाम देते हैं।

B
S
Eउत्तर $\Rightarrow$ 15

शुद्ध वाक्य -

- (i) उसने मुझसे कुछ नहीं कहा।
(2) भवदीय ।

उत्तर $\Rightarrow$ 16

हास्य रस $\Rightarrow$ "काव्य में किसी विचित्र वेशाभूषा, कथन आदि हंसी उत्पन्न करने वाले कार्यों को देखकर हृदय में हास्य 'हास' नामक स्वाधी भाव जागृत होता है, वहाँ हास्य रस की उत्पत्ति होती है।"

9



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उदाहरण -

म महावीर हैं पापड़ को तोड़ सकता हैं।
गुरसा आ जाये तो, कागज को भरोड़
सकता हैं॥

उत्तर $\Rightarrow 17$

लेखिका के घर गौरा के आने से पूर्व
घर के लिए दूध बवाले द्वारा ही विक्रय
किया जाता था परन्तु गौरा के दूध देना
प्रारम्भ कर देने से उसकी विक्री रुक
गई। अतः बवाले ने दूधपत्र 'गौरा' को
भोजन के दौरान गुड में लपेटकर
सुई खिला दी।

उत्तर $\Rightarrow 18$

(OR)

राजभाषा

जहाँ राष्ट्रभाषा अन्य भाषा-भाषी राज्यों
के बीच सेतु का काम करती है वही
राजभाषा राज्य के प्रशासनिक काम-काज
की भाषा है। राजभाषा अधिनियम के अनुसार
देशीय भाषा के साथ-साथ हिन्दी में
अनुवाद स्वीकार होता है। जब कोई भाषा
राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर लेती है तो
इसका महत्व और बढ़ जाता है। प्रशासनिक

10



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

सेवा में राजभाषा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

विशेषताएं ⇒

(1) राजभाषा किसी राज्य की प्रशासनिक काम-काज की भाषा होती है।

(2) राजभाषा का क्षेत्र राज्य तक ही सीमित रहता है।

B

S

E

उत्तर ⇒ 19 (OR)

यमक अलंकार ⇒ यमक का अर्थ है दो।

अतः जब एक ही शब्द की भिन्न अर्थ में आवृत्ति होती है तो वही यमक अलंकार होता है।

उदाहरण "कनक - कनक ते सौ गुणी मादकता अधिकार,
या पाये बौरा नर वा खाये बौराध" ॥

इल्लेख अलंकार ⇒ इल्लेख का अर्थ है चिपकना।

काव्य में जहाँ एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलते हैं वहाँ इल्लेख अलंकार होता है।

उदाहरण -

"राहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब नून।
पानी गढ़ न उबरे, मेरी मानस नून" ॥

11



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर 20

रिपोर्टेज :-

"रिपोर्टेज" शब्द अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' शब्द से बना हुआ है जिसका अर्थ होता है किसी घटना, व्यक्ति अथवा वस्तु का आँखों देखा या कानों सुना बर्णन करना। रिपोर्टेज में तथ्य की कलात्मकता पर ध्यान नहीं दिया जाता है बल्कि विवरण पर ध्यान दिया जाता है।

विशेषताएँ :-

- 1) रिपोर्टेज में किसी विशेष व्यक्ति वस्तु का बड़े रीचके दृष्टि से बर्णन किया जाता है।
- 2) रिपोर्टेज में अतीत का परीक्षण होता है।
- 3) रिपोर्टेज में कलात्मकता पर ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि घटना के विवरण पर ध्यान दिया जाता है।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर $\Rightarrow$ 21

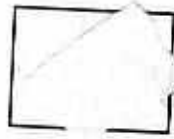
प्रयोगवाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं।

(1) नवीन उपमानों का प्रयोग - प्रयोगवादी कवियों ने पुराने एवं प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों का प्रयोग किया है वे मानते हैं कि काव्य के पुराने उपमान अब वासी पड़ गए हैं।

(2) प्रेम प्राण भावनाओं का खुला चित्रण - इन्होंने प्रेम भावनाओं का अत्यंत खुला चित्रण कर 'अवलीखता' का समावेश कर दिया है।

(3) बुढ़ाप की प्रचानता - प्रयोगवादी कवियों ने बुढ़ि तत्व को अधिक प्रचानता दी है इसके कारण काव्य में कहीं-कहीं दुरुहता आ गई है।

प्रमुख कवि	रचनाएँ
(1) अज्ञेय	हरी घास पर हज़ार भर
(2) मुक्तिबोध	भूरी - भूरी खाक धूल
(3) नरेश मेहता	संशय की एक रात
(4) शर्मवीर भारती	अंधायुग, कनुप्रिया



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 13 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर $\Rightarrow$ 22सूरदास

(अ) दो रचनाएँ $\Rightarrow$ (1) सूरसागर (2) सूरदासावली
(3) साहित्य लहरी

भावपल -

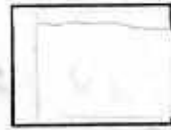
भक्ति भाव $\Rightarrow$ सूरदास कृष्ण भक्त थे। काव्य ही उनका भगवत भजन था। एक भक्त हृदय की अभिव्यक्ति उनके काव्य में सहज ही दिखाई पड़ती है। उनकी भक्ति सखा भाव की थी। कृष्ण को सखा मानकर उनकी बाल-लीलाओं और प्रेम लीलाओं का अद्भुत वर्णन किया है।

भोक्ता रस संयोजन $\Rightarrow$ रसों की उत्कृष्ट रस संयोजना के आधार पर ब्रह्मसुन्दर दास ने उन्हें 'रसतिष्ठ' कवि कहकर पुकारा है। उनके काव्य में वात्सल्य रस का प्रमुख रस वर्णन किया है।

अद्वितीय वात्सल्य $\Rightarrow$ सूरदास ने कृष्ण के बाल-चित्र के हृदयस्पर्शी अंश का जैसा अनूठा मनोवैज्ञानिक एवं सरस वर्णन किया है वैसा वर्णन सम्पूर्ण विश्व के साहित्य में दुर्लभ है। सूरदास जी वात्सल्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 14 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

कलायत्न -

भाषा → सूरदास जी ने जनमानस में प्रचलित
 जन भाषा को अपनाया है।
 इनकी भाषा में संस्कृत के तूह्यम एवं तदभव
 दोनों रूप देखने को मिलते हैं।
 लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग से इनकी
 भाषा में चार चांद लग गए हैं।

शैली → सूरदास जी ने मुक्तक काल्प शैली में
 अपने गीतों (काव्यों) की रचना
 की है। गीतों की दृष्टि से यह शैली
 को अपनाया है।

अलंकार योजना → सूरदास जी के काल्प में अलंकारों
 का स्वाभाविक रूप से वर्णन
 हुआ है। अलंकारों में मुख्यतः रूपमा, रूपक,
 उपमेषा, अनुप्रास, चमक, श्लेष आदि अलंकारों
 का प्रयोग देखने को मिलता है।

साहित्य में स्थान → सूरदास जी का अलंकार के
 जनभाषा कवियों में सर्वोत्कृष्ट
 स्थान है। सूरदास जी का बाल-प्रकृति चित्रण,
 वात्सल्य तथा भ्रंगार का वर्णन अद्वितीय है।
 सूरदास जी को हिन्दी साहित्य आकाश का
 सूर्य कहा जाता है। सूरदास जी के काल्प
 में वात्सल्य का सुंदर वर्णन हुआ है। इसलिये
 ये वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते
 हैं। इनकी कुछ रचनाएँ विश्व साहित्य
 की धरोहर हैं।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



(उत्तर = 23)

उषा प्रियंवदा

हो रचनाएँ =

- (1) निर्दली और गुनाव (2) किन्तु वस्तु आया
(3) पंचपन खमै लाल दीपार

भाषा - शैली -

भाषा - उषा प्रियंवदा जी की भाषाओं की अपनी एक विशेषता है इनकी रचनाओं में प्रसंग के अनुकूल उपयुक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है। लोककविताओं एवं मुहावरों के प्रयोग से इनकी भाषा में चार चोद लग गई हैं।

शैली - उषा प्रियंवदा जी की रचनाओं में निम्न शैलियों का प्रयोग हुआ है।

- (1) शवेषणात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग इन्होंने सांस्कृतिक विषयों में किया है।
(2) आलोचनात्मक - इन्होंने हिंदी साहित्य संबंधी विषयों के विवेचन में इस शैली का प्रयोग हुआ है।

- (3) वर्णनात्मक शैली - प्रियंवदा जी की वर्णनात्मक शैली इतनी स्पष्ट सरल व सुवोद्य है कि वह मानव मन के सामने एक चित्र सा उपस्थित कर देती है।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 16 के अंक

दुप अंक



प्रश्न क्र.

(14) भावार्थक शैली :-

जहाँ प्रियवंदा जी आँवों में वह जाती है वहाँ यह शैली दिखाई देती है।

(15) विवरणात्मक शैली :- इस शैली का प्रयोग मैं किया है। गम्भीर से गम्भीर विषयों को भी इस शैली में सरसता से व्यक्त कर देता हूँ।

B
S
Eसाहित्य में स्थान :-

भाषा और कलापद्धति की दृष्टि से ऊँचा प्रियवंदा जी का कल्प उच्चकोटि का है। वे एक कहानीकार के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य की प्रगति में इनका अनुत्तरीय योगदान है।

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 17 के अंक कुल अंक



उत्तर = 24

संकेत किली अति

अथ कहते हैं।

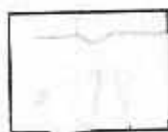
संदर्भ ⇒ प्रकृत गद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'अथ' नामक शीर्षक से लिया है इसके लेखक रामचन्द्र शुक्ल जी हैं।

प्रसंग ⇒ लेखक ने अथ को स्पष्ट किया है।

व्याख्या ⇒ अथ का शब्दिक अर्थ है - डर। डर हृदय में उत्पन्न अथ वस्तु जो आकलना लाती है। किली अति हुई आपदा या विपत्ति के आने के दुख के कारण एक विशेष प्रकार का अवैगपूर्ण तथा स्तम्भकारक मनोभाव पैदा होता है 'अथ' कहलाता है। अथ में आकलना होती है इससे बाहर जाने की।

विशेष ⇒

- ① 'अथ' को दर्शाया गया है।
- ② राष्ट्र-चापन उत्तम है।
- ③ भाषा में प्रवाह है।
- ④ लक्षणा शब्द शक्ति का सुन्दर इष्टव्य प्रयोग हुआ है।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

उत्तर 35

संकेत - मैया

की जोड़ी

संदर्भ 3 प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक के
'वात्सल्य और स्नेह' के दूर के वालक
नामक शीर्षक से लिखा गया है इसके
कवि सुरदास जी हैं।

प्रसंग 3 यहाँ कृष्ण अपनी माँ से चोरी बहने की
विवरण करते हैं।

B

S

E

व्याख्या 3 कृष्ण कहते हैं कि हे माता मुझे
कितनी ही बार कूँचा दूध
पीते हो गई है लेकिन वह चोरी अभी
भी होती है। मेरे कथानुसार मेरी दोरी
बलदाऊ की चोरी के समान लम्बी और
मोटी हो जायेगी जो काटते गुहरे में
झोर नहीं सकेगा। समय नागिन की तरह
बोह जाया करेगी। हे मुझे कूँचा दूध
पिलाती है उसे पचना नहीं है और
मुझे माखन रीरी नहीं देती है। माताएँ
बलाए लेने लगिकी हैं और हलखल
होने आइयों की जोड़ी चिरंजीव हो।

विशेष 3 (1) शिशु के प्रति स्नेह का वर्णन
है।

(2) अजभाषा का प्रयोग हुआ है।

19

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 19 के अंक

कुल अंक



उत्तर 3 26

मनुष्य एक

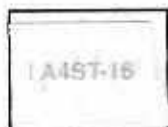
परम्परा विश्वास

(क) इतिहास मित्रता / मैत्री

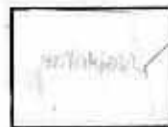
(ख) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से
अलग इसके अस्तित्व की कल्पना
भी नहीं की जा सकती।

(ग) मित्र एक ऐसा इंसान, गुरु तथा माता है
जो इसके हानों को दूर करने में
सहायता करता है।

20



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र.

(उत्तर $\Rightarrow$ 27) (OR)

श्रीवा में,

जिल्हाधिकारी महोदय,
शिवपुरी (म. प्र.)

विषय $\Rightarrow$ परीक्षाकाल में स्वनि विस्तारक यंत्रों पर
प्रतिबंध लगाने हेतु।

महोदय,

B
S
E
विनम्र निवेदन है कि माध्यमिक शिक्षा
मण्डल की परीक्षाओं का समय निकट आ रहा
है। हम दावा अपने अध्ययन में व्यस्त हैं परन्तु
जगह-जगह लाउडस्पीकों की आवाजों से
हमारे अध्ययन में व्यवधान पड़ता है। सभी
सार्वजनिक कार्यक्रमों और दुकानों पर निर्वाचन
रूप से लाउडस्पीकर लगाए जा रहे हैं
इससे स्वनि प्रदूषण हो रहा है। हम
एकाग्रचित होकर अपना अध्ययन नहीं कर
पाते।

अतः नगर के हजारों छात्रों के भविष्य को
रक्षान में रखकर परीक्षाकाल में स्वनि विस्तारक
यंत्रों पर रोक लगाने का आदेश जारी
करें। आपको कृति कृपा होगी।

"स्वल्पवाद"

दिनांक

01/03/2018

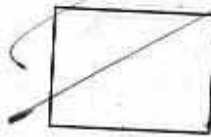
भवदीय

"अ" "व" ल



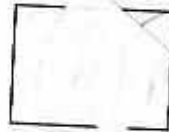
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 21 के अंक

=



कुल अंक

उत्तर $\Rightarrow$ 28

जल का महत्व

जल से जीवन, जल ही जीवन जल जीवन का दातृ
जल संरक्षण कर ले मानव, जल भविष्य निमाता है।

रूपरेखा

(1) प्रस्तावना

(2) जल का महत्व

(3) जल का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग

3.1 कृषि कार्य में

3.2 उद्योगों में

3.3 घरेलू कार्य में

3.4 साफ सफाई हेतु

3.5 पीने हेतु

(4) जल प्रदूषण की समस्या

(5) जल प्रदूषण के कारण

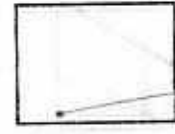
(6) प्रदूषण को रोकने के उपाय

(7) उपसंहार

प्रस्तावना $\Rightarrow$ जल ही जीवन है यह प्राचीन
उक्ति है। जल का हमारे जीवन
में अत्यधिक महत्व है। पृथ्वी पर जीवन
का विकास जल में एककोशिकीय जीव
के रूप में हुआ है बाद में इस
एककोशिकीय जीव से मछली के कई
व अन्य जीवों का विकास हुआ।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र.

(2) जल का महत्व

जल का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि हमें इस जल के बिना मानव जीवन को बना नहीं रख सकते हैं। जल का महत्व इस बात से स्पष्ट है कि मनुष्य भोजन के बिना 7 दिनों तक जीवित रह सकता है जबकि जल के बिना मात्र तीन (3) दिन तक ही। सम्पूर्ण शरीर में 70-75% शरीर जल का ही है।

B
S
E

(3) जल का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग -

(3.1) कृषि कार्यों में -

कृषि का आधार जल ही है। जल के बिना कृषि नहीं की जा सकती। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ कृषि का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय कृषि विश्व की 17-5% जनसंख्या का पालन करती है। कृषि का आधार जल ही है।

(3.2) घरेलू कार्यों में - घरेलू कार्यों में पानी साफ करने खाना पकाने आदि के लिए किया जाता है।



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 23 के अंक

=



कुल अंक



(3.3) उद्योगों में -

जल का उपयोग उद्योगों में किया जाता है। जैसे सूती वस्त्र उद्योग में रेशम को साफ करने के लिए प्रयोग में लाना। इसके अतिरिक्त जल विद्युत प्रणाली उद्योगों को सस्ती जल विद्युत उपलब्ध कराती है।

(3.4) साफ सफाई हेतु -

जल का उपयोग विभिन्न स्थानों को साफ-सफाई के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग मनोरंजन के क्षेत्र में भी किया जाता है जैसे बाह्य पार्क, वाटर स्प्रिंग, स्प्रिंग पार्क इत्यादि।

(3.5) पीने हेतु -

जल का सर्वाधिक महत्व इसकी पीने के लिए उपयोग में लाना है। स्वच्छ पचाने के लिए जल अति आवश्यक है। यदि स्वच्छ पचाने के लिए पर्याप्त मात्रा में जल नहीं मिलेगा तो वह रक्त से इसकी आपूर्ति करने लगता है जो पड़ोसी को खतरा होती है जिससे लकड़ा मार जाने व खून के गिरा हो जाने का डर रहता है।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(4) जल प्रदूषण की समस्या आज विश्व में जल गंभीर समस्या विद्यमान है। अनेक देशों विकासशील देशों में स्वच्छ पेयजल की समस्या है इन देशों में 80% से भी अधिक लोग प्रदूषित जल के कारण बीते हैं।

(5) जल प्रदूषण के कारण -

- (1) कल कारखानों द्वारा विषैले रसायनों नदियों में प्रवाहित किये जाने के कारण।
- (2) शहरों में वाहित मल - मूत्र के द्वारा।
- (3) पशुओं की जलवायों में नहलाना।

(6) रोकथाम के उपाय -

- (1) कल कारखानों के गंदे जल को प्रदूषित कर नदियों में मिलाया जाए।
- (2) लोगों को इसके प्रति जागरूक करें।
- (3) शहरों के मल मूत्र को जलवायों में नहीं बहानी चाहिए।
- (4) पशुओं को सार्वजनिक जलवायों में नहीं नहलाना चाहिए।

B
S
E



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय वर्ष 20

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाये ↓

परीक्षा का विषय

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

01 03 2018

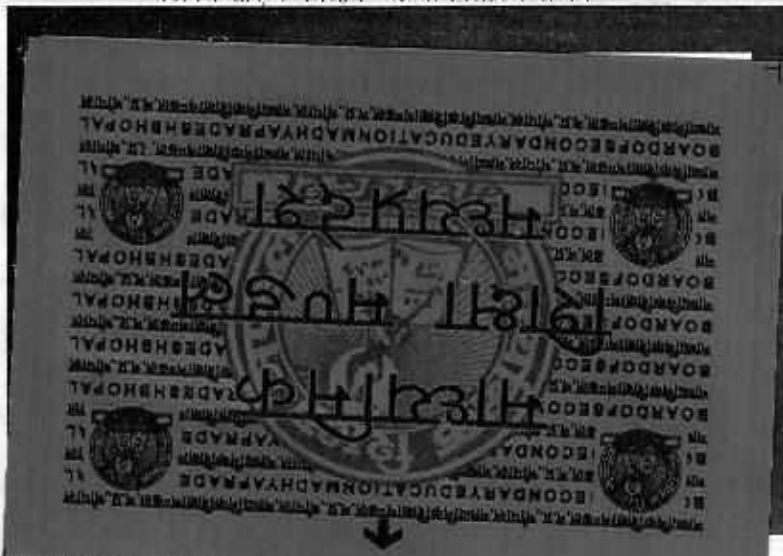
हिंदी विद्यार्थी

0 0 1

हिंदी

स्टीकर तौर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाये →



परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Signature

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

Signature

मुख्य उत्तर पुस्तिका के आत्म पृष्ठ क्रमांक.....

+ =

B
S
E

(क) उपलब्ध है

जल में परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि जल का महत्व उसी प्रकार का है जिस प्रकार मातृ शरीर में आत्मा का। जल की प्रदूषण के रोकथाम किया जाना नितांत आवश्यक है साथ ही कुछ ऐसी तकनीक भी निजात किछु जाएं ताकि समुद्र के खारे जल को पीने योग्य बनाया जा सके। क्योंकि भूमि जल व खराब जल का स्तर लगातार गिरता ही जा रहा है।

रहीमदास ने कहा है -

"रहीमन पानी राखिये, बिना पानी सब दूने। पानी गए न ऊबरे, भीती मानस नूने" ॥



पृष्ठ के अंकों का योग



उत्तर ३२४ का व

पराधीन सपनें सुख नहीं

रूपरेखा ३

- (1) प्रस्तावना 1
- (2) परीपकार का अर्थ 1
- (3) परीपकार से लाभ 1
- (4) परीपकार का महत्व 1
- (5) उपसंहार 1

परीपकार अथवा

दीपावली

रूपरेखा ३

- (1) प्रस्तावना 1
- (2) दीपावली क्या है 1
- (3) दीपावली मनाने का कारण 1
- (4) दीपावली का हमारे आदर्शों पर प्रभाव 1
- (5) उपसंहार 1